राजसमन्द–सत्र

दिनांक - 13.12.2019 समय 2:00 से 4:30 बजे

रिपोर्टर – श्री कृष्ण कुमार कुमावत

अध्यक्ष – डॉ. रचना तैलंग
सत्र समन्वयक – अनिल कुमार कालोरिया

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस (13-12-2019) को राजसमन्द सत्र में डॉ. रचना तैलंग (विभागाध्यक्ष - समाजशास्त्र विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द ने कार्यशाला के तहत् राजसमन्द जिले की व्यापक अनुसंधान व रोजगार योजना पर विस्तार से व्याख्यान दिया। राजसमन्द सत्र के सह समन्वयक श्री अनिल कुमार कालोरिया रहे। डॉ. रचना तैलंग ने राजसमन्द जिले का इतिहास, संस्कृति, धार्मिक पृष्ठभूमि परम्पराएं, विरासत, कला संगीत आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए राजसमन्द जिले को रोजगार की दृष्टि स्वावलम्बी बनाने की विस्तृत योजना प्रस्तुत की। डॉ. तैलंग के वक्तव्य को संक्षिप्त रुप से इस प्रकार कहा जा सकता है।

राजसमन्द के विकास की प्रारम्भिक स्थिति का वर्णन करते हुए बताया कि क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण चरण इस प्रकार रहे :-

1. मेवाड़ राज्य के अन्तर्गत महाराणा राजसिंह ने राजनगर में गौमती नदी पर राजसमन्द झील का निर्माण कराया व नौचोकी विस्तृत पाल व राज प्रशस्ति महाकाव्य का शिलालेख करवाया।
2. झील के निर्माण के समय पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ के आचार्य श्री ब्रजभूषण लाल जी प्रथम ने द्वारकाधीश जी को काकरोली में पधारने का प्रस्ताव रखा व द्वारकाधीश जी का मंदिर बना और पुष्टिमार्ग की तृतीय पीठ कायम हुई। महाकवि रणछोड़ भटट् तैलंग के महाकाव्य राजप्रशस्ति को नौचोकी की ऐतिहासिक पाल पर 25 शिलालेख में उत्कीर्ण करवाया गया।
3. तृतीय चरण आधुनिक युग का रहा जिसमें 1975 में औद्योगिक युग आया तथा जे.के. टायर एवं संगमरमर खदानें आरम्भ हुई।

सरकार द्वारा राजसमन्द को जिला घोषित कर विकास प्रारम्भ हुआ। राजसमन्द जिले में पर्यावरण, इतिहास व प्रशासनिक दृष्टि से विकास की व्यापक संभावनाएँ हैं। अतः संस्कृति व विरासत, पर्यटन आदि वैकल्पिक व्यवसायों को बढ़ावा देना चाहिये।

डॉ. रचना तैलंग
सह आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द
राजसमन्द जिले की व्यापक अनुसंधान व रोजगार योजना

Scanned by CamScanner

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म शताब्दी पर आयोजित

(अंतर्विषयक)

गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श और यथार्थ

दिनांक : 12, 13 व 14 दिसम्बर, 2019

संरक्षक :
डॉ. रचना तैलंग
नोडल प्राचार्य (रेस), जिला राजसमन्द (राज.)
विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र विभाग)
प्राचार्य (का.) - रा.म. राजसमन्द, रेलमगरा, कुम्भलगढ़
अध्यक्ष - राजस्थान प्रदेश आचार्य कुल (विनोबा भावे)
समन्वयक - भारतीय सांस्कृतिक निधि, राजसमन्द

समन्वयक :
डॉ. सुमन बड़ोला
विभागाध्यक्ष व सह-आचार्य (भूगोल विभाग),
रा.रं.को.रा.म., राजसमन्द
प्राचार्य (का.) - राजकीय कन्या महाविद्यालय,
राजसमन्द (राज.)

आयोजन सचिव :
श्री अनिल कुमार कलोरिया
सहायक आचार्य (समाजशास्त्र विभाग)
रा.रं.को.रा.म., राजसमन्द

सह-समन्वयक :
डॉ. दिनेश हंस
विभागाध्यक्ष व सह-आचार्य (वनस्पतिशास्त्र विभा
रा.रं.को.रा.म., राजसमन्द

आयोजन समिति सदस्य :
श्री प्रेमसिंह चौहान, डॉ. प्रेमलता विकल, डॉ. वृजेश कुमार बासोतिया, डॉ. उषा शर्मा, डॉ. संतोष भण्डारी, श्रीमती विभा शर्मा, श्री गजराजसिंह, डॉ. प्रतीक विजय, डॉ. कृष्णकुमार कुमावत, श्री गोपाल लाल कुमावत, श्री हरिलाल बलाई, श्री मनदीपसिंह, श्री सोहनलाल गोसाई, डॉ. मीनाक्षी बोहरा

आयोजन : समाजशास्त्र विभाग, सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय, राजसमन्द (राजस्थान)

संगोष्ठी स्थल : अणुव्रत विश्व भारती, राजसमन्द (राजस्थान) के सौजन्य से

संगोष्ठी कार्यक्रम

12 दिसम्बर, 2019 (गुरूवार)

उद्घाटन सत्र : प्रात: 11:00 से 1:00 बजे तक
स्वागत, संगोष्ठी परिचय - महाविद्यालय, अणुविभा, आचार्यकुल, भारतीय सांस्कृतिक निधि परिचय, आभार

भोजन : दोपहर 1:00 से 2:00 बजे तक

गाँधी सत्र : दोपहर 2:00 से सायं 5:00 बजे तक
(पत्रवाचन व चर्चा) गाँधी दर्शन : आदर्श और यथार्थ, ग्राम स्वराज्य, बुनियादी शिक्षा, सत्य-अहिंसा, आर्थिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय चिंतन

अणुविभा सत्र : सायं 6:00 से
अणुव्रत विश्व भारती दर्शन

फिल्म प्रदर्शन : रात्रि 8:00 से

13 दिसम्बर, 2019 (शुक्रवार)

विनोबा सत्र : प्रात: 9:30 से 12:30 बजे तक
(पत्र वाचन व चर्चा) सर्वोदय, भूदान, आचार्यकुल, विश्वगुरू चिंतन

भोजन : दोपहर 1:00 से 2:00 बजे तक

राजसमन्द सत्र : दोप. 2:30 से सायं 4:30 बजे तक
आदर्श जिला योजना (रोजगार स्वावलम्बन)

समापन समारोह : सायं 4:30 बजे से

14 दिसम्बर, 2019 (शनिवार)

नाथद्वारा व हल्दीघाटी भ्रमण

कार्यशाला : प्रात: 8:00 बजे से
धर्म, पर्यटन, संस्कृति, इतिहास एवं स्वावलम्बन पर आधारित विरासत कार्यशाला

Scanned by CamScanner

संगोष्ठी सार

1. **राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय क्या था ?**

उत्तर- गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श व यथार्थ।

2. **यह विषय क्यों चुना गया ?**

उत्तर- वर्ष 2019 में महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म शताब्दी पूरा विश्व मना रहा है। गाँधी-विनोबा के दर्शन का आदर्श क्या था ? उसका यथार्थ मूल्यांकन करने हेतु यह विषय चुना गया है। गाँधी के दर्शन व यथार्थ को उस जमाने में विनोबा भावे ने यथार्थ रुप दिया व सर्वोदय भूदान आंदोलन किया। अतः आज डेढ़ शताब्दी बाद जाँच पड़ताल हेतु यह विषय चुना लिया गया है।

3. **इसका आयोजक कौन था ?**

उत्तर- संगोष्ठी के आयोजक की संकल्पना डॉ. रचना तैलंग की थी जो वर्तमान में सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द में समाजशास्त्र विभाग में सह-आचार्य है। वरिष्ठतम संकाय सदस्य होने से महाविद्यालय के प्राचार्य एवं समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष पद का कार्य भी कर रही है। विषय की पड़ताल एवं अनुसंधान का स्वरुप भी है कि गाँधी आज कितने यथार्थ हैं।

4. **सह-आयोजक कौन थे ?**

उत्तर- संगोष्ठी के चार सह आयोजक थे।

1. अणुव्रत विश्व भारती, राजसमन्द – गाँधी विनोबा अहिंसा व अणुव्रत के सिद्धान्तों को यथार्थ रुप देने वाली संस्था जो आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ एवं विश्वशान्ति पर कार्य करती है।

2. राजस्थान प्रदेश आचार्य कुल - विनोबा भावे द्वारा संस्थापित आचार्य कुल की प्रदेश इकाई एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष का पूर्ण संबल व समर्थन मिला।

3. भारतीय सांस्कृतिक निधि – भारत में विरासत व संस्कृति के लिये काम करने वाली संस्था जो इन्टेक के नाम से प्रसिद्ध है। विरासत संरक्षण के रुप में गाँधी विचार को आगे बढ़ाने हेतु आगे आई तथा आर्थिक सहयोग के साथ हल्दीघाटी कार्यशाला व संग्रहालय भ्रमण हेतु पूर्ण व्यवस्था की जिम्मेदारी ली।

4. विजनेस रुरल हब – श्री कमल टावरी द्वारा संचालित इकाई ने पूर्ण सहयोग व प्रेरणा से युवाओं में स्थानीय धन्धों को बढ़ावा देने हेतु सहयोग दिया व कार्यशाला का सफल संचालन किया।

5. **संगोष्ठी का उद्घाटन किसने किया ?**

उत्तर- संगोष्ठी एवं महाविद्यालय के छात्रसंघ कार्यालय का उद्घाटन राजसमन्द के प्रभारी मंत्री श्री उदय लाल आंजना द्वारा किया गया जो राजस्थान सरकार के सहकारिता मंत्री हैं।

6. **संगोष्ठी में कितने सहभागी थे ?**

उत्तर- संगोष्ठी में 60 से अधिक संभागी 30 से अधिक अतिथि एवं 80 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया, लगभग 170 प्रतिभागी रहे।

Scanned by CamScanner

तकनीकी सत्र – चतुर्थ

दिनांक - 13.12.2019 समय - 11:15 से 12:30 बजे

अध्यक्ष – डॉ. विजय खिलनानी
उपाध्यक्ष – डॉ. दिनेश हंस

रिपोर्टर – श्री गोपाल कुमावत, श्री सोहनलाल गोसाई
सत्र समन्वयक – श्री कृष्ण कुमार कुमावत

विनोबा दर्शन पर आयोजित तकनीकी सत्र चतुर्थ विनोब भावे को समर्पित रहा। सत्र समन्वयक डा. बृजेश कुमार बासोतिया ने विनोबा भावे का जीवन परिचय दिया। सर्व प्रथम डा. सर्वेश कुमार यादव (सहायक आचार्य-राजनीति विज्ञान) राजकीय कन्या महाविद्यालय, राजसमन्द ने विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन पर प्रकाश डाला। श्री हरिलाल बलाई (सहायक आचार्य-इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, राजसमन्द ने गाँधी के सर्वोदय समाज की अवधारणा पर अपने शोधपत्र के माध्यम से विश्लेषणातमक अध्ययन प्रस्तुत किया।

डा. इन्द्रसिंह राठौड़ (सहायक आचार्य - समाजशास्त्र), वी.एन. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द ने अपने शोधपत्र के माध्यम से बताया कि वैश्वीकरण के दौर में सर्वोदय की क्या भूमिका हो सकती है ? उन्होंने बताया कि वसुदेव कुटुम्ब की संस्कृति वाले भारत देश में सर्वोदय और भी अधिक प्रासंगिक है। श्री प्रहलाद धाकड़ (सहायक आचार्य), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेरवाड़ा ने अपने शोधपत्र में गाँधी के आर्थिक विचारों का अध्ययन प्रस्तुत किया। डा. क्षिप्रा भारद्वाज (सह-आचार्य-रसायनशास्त्र), राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर ने अपने शोधपत्र में विज्ञान को लेकर गाँधी के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। डा. कृष्णकुमार कुमावत (सहायक आचार्य - संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय राजसमन्द ने गाँधी दर्शन एवं आध्यात्म के बीच सम्बन्ध की व्याख्या की। श्री गजराज सिंह (सहायक-आचार्य), अर्थशास्त्र ने ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण की विवेचना की। श्री सुनील वर्मा (सहायक आचार्य), राजकीय महाविद्यालय शिवंगज ने भूदान : साम्य समाज के निर्माण का मार्ग पर अपनी शोध प्रस्तुत की। श्रीमती इन्दुबाला कुमावत, राजकीय महाविद्यालय बालेसर, जोधपुर ने गाँधी व विनोबा के आदर्शों पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

पत्र वाचन के इसी क्रम में डॉ. प्रणव देव, डॉ. अर्चना द्विवेदी, श्रीमती शोभा गौतम, डॉ. अशोक कुमार खेरवाल, श्रीमती अंजू चौधरी एवं श्री विनेश जैन ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। सत्र अध्यक्ष डा. विजय खिलनानी ने इस सत्र में प्रस्तुत शोधपत्रों पर टिप्पणी देते हुए विनोबा भावे और उनके जीवन एवं आन्दोलन पर प्रकाश डाला। डॉ. खिलनानी ने स्पष्ट किया कि सेवा ही दूर दराज के गांवों में जाकर गरीब से गरीब व्यक्तियों की सेवा ही महात्मा गाँधी और विनोबा भावे को सच्ची श्रद्धांजलि हैं। कार्यक्रम के अन्त में उपाध्यक्ष डा. दिनेश हंस ने आभार व्यक्त किया। सत्र की रिपोर्टिंग का कार्य श्री गोपाल लाल कुमावत,

Scanned by CamScanner

उद्घाटन-सत्र

दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 समय : प्रात: 11:00 से दोपहर 1:00 बजे तक

आभार उद्बोधन - श्री अनिलकुमार कालोरिया
मुख्य वक्ता - श्रीमती डॉ. रचना तैलंग, श्री संचयशील जैन, श्री कमल टावरी

गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श व यथार्थ विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय राजसमन्द के प्रागंण में 12 दिसम्बर 2019 को राजस्थान सरकार के सहकारिता व संभाग (उदयपुर) के प्रभारी मंत्री श्री उदयलाल आंजना द्वारा किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष के रुप में महाविद्यालय की नोडल प्रभारी व प्राचार्य डा. रचना तैलंग भी उपस्थित रही, जो संगोष्ठी की संरक्षक एवं समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्षा भी हैं। विशिष्ठ अतिथि के रुप में सहआयोजक संस्था रुरल बिजनेस हब के श्री कमल टावरी एवं प्रदेश कांग्रेस कमेटी के श्री हरिसिंह राठौड तथा जिलाध्यक्ष श्री देवकीनन्दन गुर्जर उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत करते हुए डा. रचना तैलंग ने संगोष्ठी के उद्देश्य बताएँ। संयोगवश इसी दिन महाविद्यालय के छात्रसंघ कार्यालय के उद्घाटन का भी कार्यक्रम था। इसलिये अधिकाधिक छात्र-छात्राएँ भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। राजस्थान सरकार की रेसा जिला संसाधन सहायता समिति की गतिविधि होने के कारण जिले के अन्य महाविद्यालयों के प्राचार्य, अधिकारी, सहआचार्य, विधार्थी भी इसमें सम्मिलित थे। दीप प्रज्ज्वलन के साथ श्री कमल सांचिहर द्वारा तैयार सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई जिसे छात्राओं ने मधुर स्वर प्रदान किया।

आयोजक समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डा. रचना तैलंग ने सह आयोजकों के रुप में सेवाएँ देने वाले अणुव्रत विश्व भारती, भारतीय सांस्कृतिक निधि, बिजनेस रुरल हब एवं महाराणा प्रताप संग्रहालय का परिचय दिया तथा बताया कि तीन दिनों में संगोष्ठी व कार्यशाला हेतु देशभर से 75 आचार्यों के लेख आये हैं जो पाँच सत्रों में अपनी प्रस्तुति देंगे। प्रथम दो सत्र गाँधी के आदर्श व विचारों को समर्पित रहेंगे। तृतीय सत्र विनोबा भावे व आचार्य कुल को समर्पित रहेगा। अणुविभा सत्र में अणुविभा का दर्शन कराया जाएगा व राजसमन्द सत्र में राजसमन्द की विरासत पर फिल्म दिखाई जाएगी एवं चतुर्थ सत्र में राजसमन्द के आदर्श व्यक्तियों का सम्मान किया जाएगा। कार्यशाला के अन्तर्गत विद्यार्थियों को वैकल्पिक रोजगार अपनाने की प्रेरणा दी जाएगी तथा तृतीय दिवस में पाँचवे सत्र के रुप में हल्दीघाटी में भ्रमण हेतु स्वाभिमानी मॉडल की प्रेरणा स्वरूप मेवाड की विरासत को देशभर के युवाओं के समक्ष प्रदर्शित किया जाएगा। आंजनाजी ने संगोष्ठी की परिकल्पना की एवं जिले को आदर्श जिला बनाने की (डा. रचना की) योजना की सराहना की। संगोष्ठी के पश्चात् भविष्य में स्वावलम्बी स्वाभिमानी रोजगार मेले लगाकर संगोष्ठी के उद्देश्यों का निरन्तर प्रचार किया जाएगा। श्री कमल टावरी ने संगोष्ठी के उद्देश्य सामने रखे एवं सुश्री शिवानी ने धन्यवाद अर्पित किया।

Scanned by CamScanner

संगोष्ठी कार्यक्रम

12 दिसम्बर, 2019 (गुरूवार)

उद्घाटन सत्र : प्रात: 11:00 - 1:00 बजे तक

स्वागत, संगोष्ठी परिचय - महाविद्यालय, अणुविभा, आचार्यकुल, भारतीय सांस्कृतिक निधि परिचय, आभार

भोजन - 1:00 - 2:00 बजे

गाँधी सत्र - 2:00 - 5:00 बजे तक

(पत्रवाचन व चर्चा) गाँधी दर्शन आदर्श और यथार्थ,
ग्राम स्वराज्य, बुनियादी शिक्षा, सत्य अहिंसा, आर्थिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय चिंतन

अणुविभा सत्र : 6:00 बजे

अणुव्रत विश्व भारती दर्शन

फिल्म प्रदर्शन : रात्रि 8:00 बजे

13 दिसम्बर, 2019 (शुक्रवार)

विनोबा सत्र :

प्रात: 9:30 - 12:30 बजे तक
(पत्रवाचन व चर्चा) सर्वोदय ,भूदान,
आचार्य कुल, विश्वगुरु चिंतन

भोजन - 1:00 - 2:00 बजे तक

राजसमन्द सत्र - 2:30 - 4:30 बजे तक

आदर्श जिला योजना (रोजगार स्वावलम्बन)

समापन समारोह : सांय 4:30 बजे से

14 दिसम्बर, 2019 (शनिवार)

नाथद्वारा व हल्दीघाटी भ्रमण

कार्यशाला -

प्रात: 8.00 बजे
धर्म, पर्यटन, संस्कृति,
इतिहास एवं स्वावलम्बन
पर आधारित विरासत
कार्यशाला

सत्र व विषय के अनुसार पत्र आमन्त्रित हैं।

नोट : उपरोक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी में आप सादर आमन्त्रित है।

नामांकन विवरण

नामांकन शुल्क (दिनांक 30 नवम्बर 2019 तक)

संभागी - 1500/- , शोधार्थी - 1000/-

विद्यार्थी - 500/- , सौजन्यार्थी - 3000/

संगोष्ठी स्थल पर (दिनांक 12 दिसम्बर 2019)

अतिरिक्त शुल्क - 300/-

बैंक खाता विवरण

बैंक खाता : सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय
महाविद्यालय, राजसमन्द

बैंक का नाम : ICICI Bank शाखा : राजसमन्द

खाता संख्या : 065501002470

IFSCode : ICIC0000655

संक्षिप्त पत्र 300 शब्दों तक 30 नवम्बर 2019 तक भेजें।

E-mail - drrachanatailang@gmail.com

हिन्दी माध्यम - Kruti Dev 010 में Font Size 14 | अंग्रेजी माध्यम - Times New Roman, Font Size 12

आवास के लिए सम्पर्क करें :

श्री गजराज सिंह (9950765425), डॉ. प्रतीक विजय (9252575866), श्री गोपाल लाल कुमावत (9928230632).

Scanned by CamScanner

दिनांक - 12.12.2019

तकनीकी सत्र – प्रथम

समय : 2:00 से 3:00 बजे

अध्यक्ष – श्री कमल टावरी
उपाध्यक्ष – श्री प्रेमसिंह चौहान

रिपोर्टर – डॉ. संतोष भण्डारी, डॉ. प्रतीक विजय
सत्र समन्वयक – श्रीमती विभा शर्मा

गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श और यथार्थ पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला का प्रथम सत्र गाँधी दर्शन को समर्पित रहा। सत्र समन्वयक श्रीमती विभा शर्मा ने सत्र का परिचय देते हुए बताया कि प्रथम सत्र में 17 शोध पत्र प्रस्तुत किए जायेंगे एवं सभी पत्र प्रस्तुतकर्त्ताओं के नाम की घोषणा कर उन्हें आमंत्रित किया जायेगा। अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के रुप श्री कमल टावरी व श्री प्रेम सिंह चौहान को मंच पर आमन्त्रित किया गया। महाविद्यालय रायपुर के अंग्रेजी के सहायक आचार्य श्री गुमान सिंह गहलोत द्वारा आर.के. नारायण के उपन्यासों पर प्रकाश डाला गया। एम.डी.एस. विश्वविद्यालय की शोधार्थी श्रीमती सीमा जोधावत द्वारा गाँधी के आदर्शों को आधुनिक समाज में कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है इस पर प्रकाश डाला गया। राजकीय महाविद्यालय, राजसमन्द के अंग्रेजी के सहायक आचार्य श्री मनदीप सिंह ने राजकमल झा के उपन्यासों में घरेलू एवं साम्प्रदायिक हिंसा का गाँधी के दृष्टिकोण से सामाजिक, सांस्कृतिक विश्लेषण किया। डा. दिनेश हंस (सहआचार्य - वनस्पति शास्त्र) ने अपने शोधपत्र गाँधी एवं विज्ञान में बताया कि गाँधीजी के विज्ञान सम्बन्धी विचार मूलतः श्रम प्रधान और पर्यावरण संरक्षण से जुडे हैं। श्री सुभाष चन्द्र नेहरा (सहायक आचार्य - इतिहास), राजकीय कन्या महाविद्यालय, नागौर द्वारा वर्तमान परिपेक्ष्य में महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा की उपयोगिता के बारे में बताया गया। डा. प्रेमलता विकल (सहायक आचार्य - वनस्पति शास्त्र) ने पत्रवाचन किया जिसमे बताया कि गाँधीजी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील थे और पर्यावरण का ध्यान रखते हुए प्रगति

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

संगोष्ठी परिचय :

सम्पूर्ण भारत वर्ष में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। इस अवसर पर गाँधी एवं उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी संत विनोबा भावे द्वारा संचालित ग्राम स्वराज, स्वदेशी आन्दोलन, बुनियादी शिक्षा, सर्वोदय, भूदान, आचार्य कुल आदि आन्दोलनों की यथार्थ स्थिति पर चिंतन जरूरी है। सरकारी, गैर-सरकारी व असरकारी संगठनों ने इन्हें अपनाया या नहीं, इसकी जमीनी सच्चाई जानने हेतु खुले चिंतन का अवसर उपलब्ध कराया जा रहा है।

गाँधी-विनोबा के आदर्शों की क्रियान्विति हेतु कार्यशाला का भी आयोजन किया जायेगा जिसमें जिला राजसमन्द का स्वाभिमानी एवं स्वावलम्बन मॉडल प्रस्तुत किया जायेगा। जिसकी विस्तृत जानकारी डा. रचना तैलंग द्वारा लिखित 'भारत बने विश्व गुरू' पुस्तक में दी गई है। इस आदर्श मॉडल का धार्मिक एवं ऐतिहासिक प्रस्तुतीकरण नाथद्वारा व हल्दीघाटी भ्रमण, स्वावलम्बन व स्वाभिमान शिक्षण के माध्यम से रखा गया है।

देश के समस्त युवाओं को स्वावलम्बी बनाने हेतु संगोष्ठी में जानकारी प्रदान की जायेगी, जिसका उपयोग सभी महाविद्यालय रोजगार सहायता मेले के रूप में कर सकेंगे। इस संगोष्ठी में विश्वविद्यालय, महाविद्यालय व समाज के हर वर्ग के बुद्धिजीवी व कार्यशील व्यक्तित्व अपने विचार रखने व ज्ञानवर्धन हेतु सम्मिलित हो सकेंगे।

आप सभी आचार्यों एवं महानुभावों से निवेदन है कि संगोष्ठी में विचार विमर्श हेतु सम्मिलित होवें। संगोष्ठी अन्तर्विषयक है। अतः सभी विभागों के आचार्यों को सम्मिलित करावें। शोधार्थियों व विद्यार्थियों को भी भाग लेने हेतु प्रेरित करें। कार्यशाला में युवाओं के रोजगार व स्वावलम्बन के लिए प्रशिक्षण दिया जायेगा। जिसके आधार पर महाविद्यालयों में रोजगार मेले भी आयोजित किये जा सकते हैं। कृपया अधिकाधिक संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लेकर संगोष्ठी को सफल बनावें।

Scanned by CamScanner

7. **संगोष्ठी के उद्देश्य क्या थे ?**

उत्तर- संगोष्ठी के उद्देश्य -

1. आधुनिक काल में गाँधी-विनोबा के महत्त्व को जाँचना ।
2. गाँधी-विनोबा के दर्शन के यथार्थ का मूल्यांकन करना।
3. राजसमन्द के स्वाभिमानी व स्वावलम्बी लोगों के कार्यों को प्रकाश में लाना ।
4. राजसमन्द के स्वाभिमानी व स्वावलम्बी लोगों के कार्यों की संभावना का पता लगाकर विद्यार्थियों को प्रेरणा देना।
5. हल्दीघाटी संग्रहालय भ्रमण के माध्यम से स्वावलम्बी मॉडल देश की विरासत, संस्कृति व स्वालम्बन के प्रति युवाओं में रुचि जगाना।

8. **क्या संगोष्ठी में उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली ?**

उत्तर- हाँ :

1. संगोष्ठी में गाँधी व विनोबा सत्र आयोजित किये गये जिसमें लगभग 61 पत्रों में गाँधी व विनोबा के आदर्श को प्रतिपादित किया।
2. आज यथार्थ रुप में कार्य करने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं को संभागियों व युवाओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया।
3. स्वावलम्बन हेतु डॉ. रचना तैलंग द्वारा राजसमन्द जिले की रोजगार योजना प्रस्तुत की गई जिसे युवाओं का व्यापक समर्थन मिला ।
4. संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र में राजसमन्द में स्वाभिमानी 50 युवाओं व प्रेरक व्यक्तियों को सम्मानित किया गया।
5. तृतीय दिवस हल्दीघाटी संग्रहालय की शैक्षणिक यात्रा आयोजित की गई जिसमें 87 संभागियों ने स्वाभिमानी मॉडल से प्रेरणा ली।

9. **संगोष्ठी के अतिथि कौन थे ?**

उत्तर- श्री कमल टावरी जी, श्री राजेशनाथ महाराज (करनाल), श्री रामदेव जी (झुंझुनू) कांतिलाल मेघवाल (दिल्ली) थे।

10. **संगोष्ठी में किन स्थानीय लोगों का सम्मान किया ?**

उत्तर- मुख्यतः स्वाभिमानी डॉ. विजय कुमार खिलनानी, श्री डॉ. हीरालाल श्रीमाली, श्री मोहनलाल श्रीमाली, श्री मनीष शर्मा, सुश्री प्रतिपदा गौड़ का सम्मान क्रमशः कुपोषण निवारण, ग्राम स्वराज्य, समाजसेव विरासत, संरक्षण, एक्यूप्रेशर व चित्रकला के क्षेत्र में सम्मान किया गया।

11. **रोजगार के किन-किन क्षेत्रों को छुआ गया हैं ?**

उत्तर- मुख्यतः संस्कृति, विरासत, पर्यटन, पर्यावरण, स्वास्थ्य, सामाजिक व खेल संस्कृति के विभिन्न पक्षों

Scanned by CamScanner

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्म शताब्दी पर आयोजित (अंतर्विषयक)

राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श और यथार्थ
दिनांक : 12, 13 व 14 दिसम्बर, 2019

संरक्षक :
डॉ. रचना तैलंग मो. 9887884942
नोडल प्राचार्य (रेस) जिला राजसमन्द (राज.)
विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र विभाग)
प्राचार्य (का.) - रा. म. राजसमन्द, रेलमगरा, कुम्भलगढ़
अध्यक्ष- राजस्थान प्रदेश आचार्य कुल (विनोबा भावे)
समन्वयक : भारतीय सांस्कृतिक निधि, राजसमन्द

आयोजन सचिव :
श्री अनिल कुमार कालोरिया
सहायक-आचार्य (समाजशास्त्र विभाग)
से. रं. को.रा.म., राजसमन्द मो. 6375265211

समन्वयक :
डॉ. सुमन बडोला
विभागाध्यक्ष व सह-आचार्य (भूगोल विभाग),
से. रं. को.रा.म., राजसमन्द
प्राचार्य (का.) - राजकीय कन्या महाविद्यालय,
राजसमन्द (राज.) मो. 9461015619

सह-समन्वयक :
डॉ. दिनेश हंस
विभागाध्यक्ष व सह-आचार्य (वनस्पतिशास्त्र विभाग)
से. रं. को.रा.म., राजसमन्द मो. 9829498548

आयोजन समिति सदस्य :
श्री प्रेमसिंह चौहान, डॉ. प्रेमलता चिकल,
डॉ. बृजेश कुमार बासोतिया,
डॉ. उषा शर्मा, डॉ. सन्तोष भण्डारी,
श्रीमती विभा शर्मा, श्री गजराज सिंह,
डॉ. प्रतीक विजय,
डॉ. कृष्ण कुमार कुमावत,
श्री गोपाल लाल कुमावत,
श्री हरिलाल बलाई, श्री मनदीप सिंह,
श्री सोहनलाल गोसाईं,
डॉ. मीनाक्षी बोहरा

आयोजक : समाजशास्त्र विभाग, सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द (राजस्थान)

संगोष्ठी स्थल : अणुव्रत विश्व भारती, राजसमन्द (राजस्थान) के सौजन्य से

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

संघर्ष करने वाले वियतनाम के राष्ट्राध्यक्ष की प्रेरणा के स्त्रोत मेवाड़ के वीरप्रतापी हल्दीघाटी के रण विजेता स्वाभिमान की जीती जागती मिशाल महाराणा प्रताप थे। आज के युग में संग्रहालय बनाकर श्रीमाली ने वे आदर्श प्रस्तुत किया जो सरकार नहीं कर पायी।

श्री मोहनलाल श्रीमाली द्वारा विरासत संरक्षण की दृष्टि से महाराणा प्रताप संग्रहालय एक आदर्श वैकल्पिक कार्य है। इससे छात्र व संभागी अत्यन्त प्रभावित हुए एवं स्वावलम्बन के आधार पर कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त की।

इस प्रेरणा से विद्यार्थी अत्यन्त लाभान्वित हुये एवं संगोष्ठी का उद्देश्य सफल प्रतीत हुआ। श्री दिनेशनाथ योगी ने अपने अनुभव को साझा करते हुए संग्रहालय व श्रीमाली जैसे स्वाभिमानी कर्मयोगी की साधना की सराहना करते हुए विद्यार्थियों में स्वावलम्बन व स्वाभिमानी मॉडल पर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। इस प्रकार संगोष्ठी के अंतिम चरण में डा. हीरा लाल श्रीमाली जो मोहन श्रीमाली के गुरु भी हैं, सबको आशीर्वाद भी प्रदान किया।

स्वयं श्रीमाली भारत में अणुव्रत शिक्षक संसद के माध्यम से शिक्षकों में नैतिक जागरण का वह कार्य कर चुके हैं जो युग प्रधान तुलसी का सपना था। इस प्रकार हल्दीघाटी यात्रा के साथ ही संगोष्ठी समाप्त हुई।

हल्दीघाटी सत्र

दिनांक 14 दिसम्बर 2019

विरासत कार्यशाला

आयोजक – भारतीय सांस्कृतिक निधि (इन्टेक) राजसमन्द

संगोष्ठी के अन्तिम चरण में तृतीय दिवस समस्त संभागीगण व विद्यार्थी व आयोजक हल्दीघाटी विरासत भ्रमण पर निकले। इसका उद्देश्य था कि गाँधी-विनोबा दर्शन के अन्तर्गत अहिंसा स्वावलम्बन स्वदेशी के आदर्श को आज 150 वर्ष बाद भी यथार्थ के धरातल पर उतारने की संकल्पना को लेकर कार्य करने वाले राजसमन्द जिले के पुरोधाओं से परिचित करवाकर युवाओं को प्रेरणा देना।

हल्दीघाटी जैसे महत्वपूर्ण विरासत स्थल को वीरान से जीवन्त बना देने वाले मेवाड़ के सिरमौर एवं भारत में स्वाभिमान की ललक पैदा करने वाले महाराणा प्रताप का संग्रहालय अपने दम पर बनाने वाले पद्म श्री मोहनलालजी श्रीमाली की कृति का प्रत्यक्ष दर्शन कराकर विद्यार्थियों व संभागियों को प्रेरणा देना इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था।

भारतीय सांस्कृतिक निधि के आजीवन सदस्य श्री मोहनलाल श्रीमाली ने 80 संभागियों को [illegible] संग्रहालय का दर्शन करवाया जो संभागियों के लिये प्रेरणा दायक था। इसके निर्माण की कहानी स्वयं श्रीमाली ने अपने मुख से संभागियों को बताई। इस निर्माण यात्रा में क्या-क्या बाधाएँ आई व कैसे विभिन्न संगठनों ने उनका सहयोग किया।

Scanned by CamScanner

अणुविभा सत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला के आयोजन में राजसमन्द की महत्वपूर्ण गाँधी-विनोबा व आचार्य तुलसी से प्रेरित अहिंसावादी संस्था अणुव्रत विश्व भारती का विशेष योगदान रहा। गाँधी विनोबा दर्शन : आदर्श व यथार्थ स्वरुप को समझाने हेतु अणुव्रत विश्वभारती से श्रेष्ठ कोई संस्थान नहीं हो सकती थी जहाँ अणुव्रत संत आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ एवं अहिंसावादी जैन संतों की कर्मस्थली, अंहिसा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला निरन्तर बनी रही है। महाव्रत धारी संतों ने आम जनों के लिये अणुव्रत का संदेश दिया व विश्व के परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत का प्रावधान रखा। यहाँ संचालित विश्व शांति निलयम एवं चिल्ड्रन पीस पेलेस जैसे परिसर का परिचय दिया गया व विभिन्न योजनाओं को समझाने हेतु पत्रक वितरित किये गये।

अणुविभा सत्र में सभी संभागियों को अणुविभा दर्शन करवाया गया। ससंद भवन, ऑडिटोरियम, तुलसी दीर्घा, वीर बालक कक्ष, गुडिया घर, विश्व वस्तु संग्रह, पुस्तकालय आदि देखकर संभागियों ने काफी सराहनीय उद्‌गार व्यक्त किये।

अणुविभा के ऑडिटोरियम, भोजनशाला, दृश्यावली व अतिथिशाला को भी व्यापक सराहना मिली। आवास व्यवस्था उत्तम रही एवं अणुविभा के समस्त परिवार का पूर्ण यहयोग रहा जिसके लिये उन्हें धन्यवाद प्रेषित किया गया।

राजसमन्द की विरासत

फिल्म प्रदर्शन

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर राजसमन्द जिले को विश्व पर्यटन पर प्रसिद्ध एवं उन विरासत स्थलों की जो विश्व स्तर की श्रेणी में रखे जाने चाहिए उनकी वास्तविक छवि प्रस्तुत करने के लिये एक फिल्म प्रस्तुत की, जिसका शीर्षक था - "राजसमन्द की विरासत"।

भारतीय सांस्कृतिक निधि के राजसमन्द अध्याय की समन्वयक डा. रचना तैलंग (नॉडल प्राचार्य व संगोष्ठी की मुख्य आयोजक) द्वारा निर्मित यह फिल्म अत्यन्त लोकप्रिय है। देशभर से आए संभागियों ने फिल्म की अत्यन्त सराहना की। यह फिल्म व राजसमन्द वंदना गीत यू ट्यूब (You Tube) पर भी देखी जा सकती हैं।

फिल्म में राजसमन्द की विरासत के रुप में श्रीनाथजी मंदिर, हल्दीघाटी, कुम्भलगढ़, संगमरमर संपदा, गणेश टेकरी, चारभुजा आदि विरासतों की

Scanned by CamScanner

12. **इस संगोष्ठी की मुख्य विशेषता क्या रही ?**

उत्तर- इस संगोष्ठी में रोजगार, गाँधी-विनोबा के विचार और आज के जीवन में उन पक्षों की ओर ध्यान दिलाया गया जिन पर आज तक ध्यान नहीं दिया गया है जो अभी तक अनुजागर रहे है। श्री कमल टावरी जी की पुस्तक Marketing The Unmarketed India एवं डॉ. रचना तैलंग की "भारत बने विश्वगुरु" के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया हैं। जो आज की शिक्षा, बेरोजगारी व विदेशी पलायन का समाधान प्रस्तुत करती है।

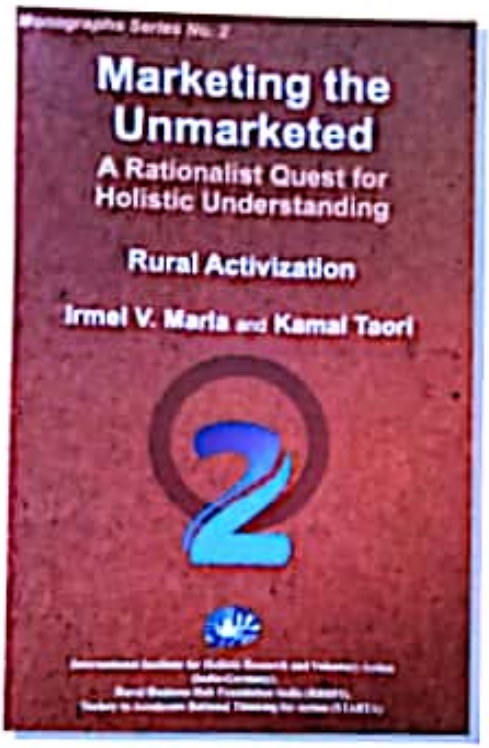

13. **क्या इन्हें लागू करने की कोई योजना बनी है ?**

उत्तर- संगोष्ठी के सुझावों व प्रतिवेदन को प्रकाशित कराकर संबन्धित संभागियों व सरकारी विभागों को भेजा जाएगा व स्वावलम्बन को प्रोत्साहित किया जाएगा।

14. **संगोष्ठी के सुझाव क्या हैं ?**

उत्तर- संगोष्ठी में प्राप्त पत्र, परिचर्चा, फिल्म प्रदर्शन एवं सम्मान व विजिट के परिणाम स्वरुप निम्नलिखित सुझाव सामने आये -

1. गाँधी-विनोबा के दिखाए मार्ग पर चलकर भारत के युवाओं को स्वाभिमानी व स्वावलम्बी बनना चाहिये।
2. सरकारी नौकरी के अवसर कम है अतः संस्कृति, पर्यावरण विरासत के क्षेत्र में स्वरोजगार को बढावा देना चाहिये।
3. महाविद्यालयों के युवाओं में संस्कृति विरासत के प्रति रुचि जगाना अतिआवश्यक है।
4. युवाओं को वैकल्पिक रोजगार हेतु व्यापक कार्यक्रम चलाना चाहिए।
5. महाविद्यालयों में रोजगार मेले लगाकर स्वावलम्बन को बढ़ावा देना चाहिए।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

संगोष्ठी समापन सत्र

समापन समारोह - सायं 4:30 बजे से

संगोष्ठी के अन्तिम सत्र के रुप में समापन सत्र का संयोजन डॉ. रचना तैलंग द्वारा किया गया। समापन सत्र में अध्यक्षता विनोबा भावे द्वारा स्थापित राष्ट्रीय आचार्य कुल के पूर्व अध्यक्ष डा. हीरालाल श्रीमाली द्वारा की गई। उपाध्यक्ष श्री कमल टावरी थे एवं विशिष्ट अतिथि के रुप में राजस्थान प्रदेश आचार्य कुल के कार्यकारी अध्यक्ष डा. विजय कुमार खिलवानी थे जो राष्ट्रीय चिकित्सा सम्मान से सम्मनित है एवं आधुनिक ग्राम स्वराज्य योजना के संचालक हैं। योगीराज राजेशनाथ महाराज विशिष्ट अतिथि थे।

राजसमन्द सत्र में राजसमन्द जिले के स्वावलम्बी स्वाभिमानी व्यक्तियों का परिचय कराया गया। डॉ. विजय कुमार खिलनानी, डा. हीरालाल श्रीमाली, श्री श्याम सुन्दर पालीवाल, श्री मनीष शर्मा, सुश्री प्रतिपदा आदि द्वारा सरकार से सहायता लिये बगैर नैतिकता, कुपोषण, पर्यावरण, स्वास्थ्य व कला के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का सम्मान श्री कमल टावरी, रुरल बिजनिस हब के द्वारा किया गया तथा युवाओं को असरकारी स्वाभीमानी मॉडल खडा करने की प्रेरणा दी।

समापन सत्र के अवसर पर डा. दिनेश हंस (सह आचार्य - वनस्पतिशास्त्र) ने सभी सत्रों की रिपोर्ट प्रस्तुत की व पत्र प्रस्तोताओं का विवरण प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी को सफल बनाने में विशेष योगदान देने के लिये डॉ. प्रेमलता विकल (सहायक आचार्य - वनस्पति शास्त्र) का हृदय से आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. रचना तैलंग द्वारा उन विद्यार्थियों के नाम प्रस्तुत किये गये जिन्होंने शिविर में मुख्य भूमिका निभाई। सह आयोजकों का धन्यवाद ज्ञापन किया एवं संगोष्ठी के अन्तर्गत सेवाऐं देने वाले सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं का सम्मान किया। अतिथियों का सम्मान श्रीनाथजी की छवि देकर किया गया। संगोष्ठी के सत्रों में रिपोर्टर, संयोजकों एवं अलग-अलग समितियों के कार्यकर्ताओं को धन्यवाद एवं सम्मान किया गया।

डॉ. रचना ने अब तक की संगोष्ठी की गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया तथा दिनांक 14-12-2019 को आयोजित होने वाली विरासत कार्यशाला हल्दीघाटी सत्र व इन्टेक से सम्बन्धित सूचना प्रदान की। कार्यशाला के उद्देश्यों की घोषणा की :-

1. ग्राम स्वरोजगार के प्रति विद्यार्थियों को प्रेरित करना साथ ही स्थानीय विभिन्न क्षेत्रों में ऐजेसियों द्वारा रोजगार उपलब्ध करवाना।
2. विभिन्न तकनीकी क्षेत्रों व सोशल मीडिया के उपयोग से रोजगार संवर्धन करना।
3. स्थानीय युवाओं को रोजगार दिलाना व पलायन रोकना।

संभागियों की बस प्रातः हल्दीघाटी पहुँची। इस अवसर पर झुझुंनु से आए श्री रामदेवजी ने विद्यार्थियों को गाँधीजी से जुड़े अनेक स्वाभिमान प्रसंग सुनाए। डा. रचना तैलंग ने विद्यार्थियों व संभागियों को राष्ट्रीय संगोष्ठी में गाँधी-विनोबा के स्वावलम्बन व संस्कृति संरक्षण के आदर्श को आज सच करने का तरीका बताया। स्वावलम्बन की मिशाल कायम करने की प्रेरणा श्रीमालीजी से लेने का सुझाव दिया। दुनिया में अमेरिका से

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

गाँधी-विनोबा दर्शन : आदर्श और यथार्थ

12-14 दिसम्बर, 2019

-:: आयोजक ::-

समाजशास्त्र विभाग

सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द (राजस्थान)

फोन नं. - 02952-221840, ई मेल - srkgovtcollegerajsamand@gmail.com

-:: सह आयोजक ::-

अणुव्रत विश्व भारती
राजसमन्द (राजस्थान)
ई-मेल - anuvibharaj@gmail.com

भारतीय सांस्कृतिक निधि
इंटेक-राजसमन्द चेप्टर,
राजसमन्द (राजस्थान)

बिजनेस रूरल हब
नई दिल्ली

महाराणा प्रताप संग्रहालय
हल्दीघाटी

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष – श्री योगी राजेशनाथ
उपाध्यक्ष – श्रीमती डॉ. सुमन बड़ोला

रिपोर्टर – श्री मनदीपसिंह, श्रीमती डॉ. मीनाक्षी बोहरा
सत्र समन्वयक – श्री अनिल कालोरिया

राष्ट्रीय संगोष्ठी का तकनीकी सत्र - द्वितीय भोजन के बाद प्रारम्भ हुआ। सत्र समन्वयक श्री अनिल कुमार कालोरिया ने सत्र का परिचय देते हुए बताया कि इस सत्र में कुल 16 शोध पत्र प्रस्तुत किए जाऐंगे। सर्वप्रथम डा. शिवकुमार शर्मा (व्याख्याता - अंग्रेजी) ने उपन्यास में महात्मा गाँधी के मूल्यों के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया। श्रीमती विभा शर्मा (सहायक आचार्य), राजकीय महाविद्यालय, राजसमन्द द्वारा वर्तमान परिदृश्य में गाँधीवाद की प्रांसगिकता बताई गई व वर्तमान के आणविक युग में गाँधीजी की अंहिसा ही सभी समस्याओं के हल का मुख्य स्त्रोत हैं। अगला शोधपत्र श्री गोपाललाल कुमावत (सहायक आचार्य - रसायनशास्त्र), राजकीय महाविद्यालय, राजसमन्द द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्री भावशेखर (सहायक आचार्य - राजनीति विज्ञान) राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर द्वारा वैज्ञानिक युग में गाँधी दर्शन की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। श्री उमेश बैलंके (प्राध्यापक), लाल बहादुर शास्त्री शिक्षा महाविद्यालय, बैंगलुर ने महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन पर विचारोत्तेजक शोध प्रस्तुत किया। डा. विनिता पालीवाल (सहायक आचार्य), बी.एन. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द द्वारा महात्मा गाँधी के विचारों का प्रभाव उपादेयता पर शोधपत्र प्रस्तुत किया गया। डा. सुरेन्द्र भारकर (सहायक निदेशक - राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग, जयपुर) एवं श्री अनिल कुमार कालोरिया (सहायक आचार्य - समाजशास्त्र), सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजसमन्द ने अपने शोधपत्र के माध्यम से बताया कि आज गाँधी के विचारों की मनुष्य सभ्यता को कितनी आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार गाँधीजी द्वारा सुझाया गया सत्य, अंहिसा, कर्मठता, झुझारुपन और सुदूर और अथक परिश्रम और धैर्य का मार्ग की मनुष्य जाति का मुख्य उद्धारक हैं। उन्होंने आगे ये बताया की गाँधी ने कहा कि उनके द्वारा सुझाये गये ये विचार नये नहीं है पर गाँधी ने जिस नवीनता और सरलता से ये विचार रखे वो बहुत महत्वपूर्ण है। पत्र वाचन की इसी कडी में डा. ज्योत्सना शर्मा, डा. मंजु जैन, डा. सुनिता गुप्ता, श्री विश्वजीत छतवानी, डा. विजय कुमार चतुर्वेदी, डा. शुभा तिवारी ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। सत्र अध्यक्ष योगी राजेशनाथ महाराज ने सत्र में प्रस्तुत विभिन्न शोधपत्रों पर अपनी टिप्पणी देते हुए वर्तमान समय में महात्मा गाँधी के विचारों में हुए मुद्दे को लेकर स्थानीयता पर दिये गये बल के बारे में समझाया। सत्र में प्रस्तुत किये गये शोधपत्रों की रिपोर्टिंग का कार्य डा. मीनाक्षी बोहरा एवं श्री मनदीप सिंह द्वारा संपादित किया गया।

Scanned by CamScanner

नगर प्रभा

राजसमन्द में राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन